# कास पठार में जलवायु परिवर्तन

## प्रिलिम्स के लिये:

**कास पठार में जलवायु परिवर्तन, होलोसीन युग, दक्षिण-पश्चिम मानसून, राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान केंद्र, संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) विश्व विरासत**

## मेन्स के लिये:

कास पठार में जलवायु परिवर्तन

## चर्चा में क्यों?

**अगरकर अनुसंधान संस्थान (Agharkar Research Institute- ARI)** और राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान केंद्र द्वारा किये गए एक हालिया अध्ययन ने प्रारंभिक-मध्य-होलोसीन एवं उत्तर **होलोसीन काल** के दौरान **कास पठार** में महत्त्वपूर्ण जलवायु परिवर्तनों पर प्रकाश डाला है।

- शोधकर्त्ताओं ने **कास पठार की पूर्व जलवायु** स्थितियों को समझने और अध्ययन के लिये एक **मौसमी झील के तलछट** का अध्ययन किया है।

//
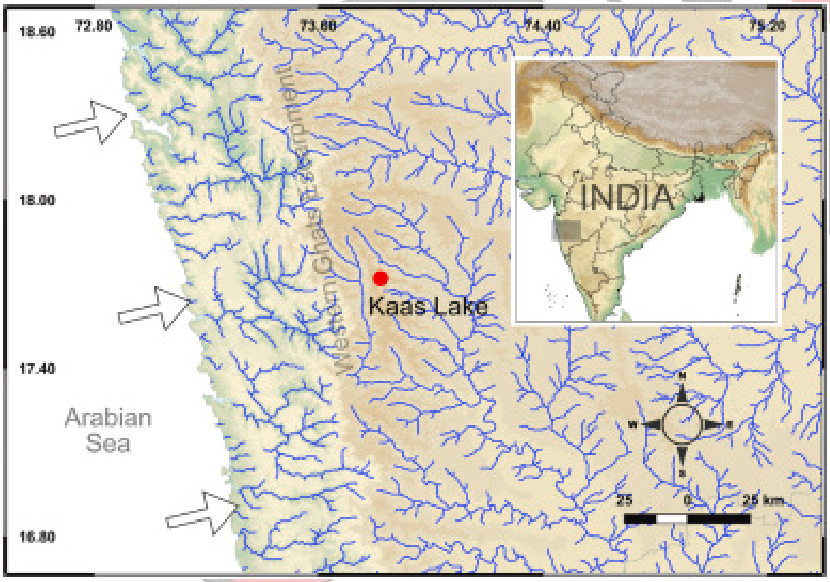


## कास पठार:

- महाराष्ट्र के सतारा ज़िले में स्थित कास पठार यूनेस्को विश्व प्राकृतिक विरासत स्थल के साथ एक निर्दिष्ट जैवविविधता हॉटस्पॉट भी है।
- इसे मराठी में कास पत्थर के नाम से जाना जाता है, इसका नाम**कासा वृक्ष** से लिया गया है जिसे वानस्पतिक रूप से **एलेओकार्पस ग्लैंडुलोसस (रुद्राक्ष परिवार)** के रूप में जाना जाता है।
- **अगस्त और सितंबर के महीनों के दौरान यह पठार विभिन्न मौसमी फूलों से ढका** रहता है, जो विभिन्न रंगों के कालीन जैसा दिखता है।

## अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:

- **प्राचीन झील एवं पर्यावरण संरक्षण:**
  - प्रारंभिक-मध्य-होलोसीन या लगभग 8000 वर्ष पूर्व का युग वह समय है जब कास पठार के वर्तमान "फ्लावर वंडर" का निर्माण हुआ था।
  - मौसमी झील को **लंबे समय के लिये संरक्षित** किया गया है तथा यह क्षेत्र की **विगत जलवायु के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि** प्रदान करती है।
- **प्रारंभिक-मध्य-होलोसीन के दौरान जलवायु परिवर्तन:**
  - लगभग 8664 वर्ष पहले की जलवायु में कम वर्षा के साथ मीठे जल से लेकर शुष्क परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ था।
  - **पॉलेन और डायटम डेटा** ने इस दौरान **भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून गतिविधि** में एक बड़े बदलाव का संकेत दिया था।
  - शुष्क परिस्थितियों के बावजूद डायटम की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि से पता चलता है कि **रुक-रुक कर आर्द्र अवधि** होती थी।
- **लेट होलोसीन जलवायु परिवर्तन:**
  - लगभग 2827 वर्ष पहले लेट होलोसीन के दौरान **वर्षा में कमी** आई थी तथा **दक्षिण-पश्चिम मानसून** कमज़ोर हो गया था।
- **हालिया पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - पिछले 1000 वर्षों में प्लैंकटोनिक और प्रदूषण-सहिष्णु डायटम टैक्सा की उच्च संख्या की उपस्थिति से संकेत से **झील के सुपोषण** के प्रमाण मिले हैं।
  - **सुपोषण किसी जल निकाय का खनिजों और पोषक तत्त्वों से अत्यधिक समृद्ध होने की प्रक्रिया है जो शैवाल की अत्यधिक वृद्धि को प्रेरित करती है,** जिससे जल निकायों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।
  - जलग्रहण क्षेत्र में कृषीय और मवेशी/पशुधन खेती सहित मानवीय गतिविधियों का इस पर्यावरणीय प्रभाव में योगदान रहा है।
- **मानसून की तीव्रता और अवधि:**
  - **लगभग 8000 वर्ष पहले प्रारंभिक होलोसीन/अभिनव युग के दौरान** दक्षिण-पश्चिम मानसून की तीव्रता काफी अधिक थी।
  - लगभग 2000 वर्ष पहले पूर्वोत्तर मानसून अपेक्षाकृत क्षीण हो गया था।
  - यह संभावना है कि कास पठार का 'फ्लावर वंडर' मार्च-अप्रैल तक लंबी अवधि के लिये अस्तित्व में था, प्रारंभिक-मध्य-होलोसीन (8000-5000 वर्ष) के दौरान मानसूनी वर्षा प्रचुर मात्रा में यानी 100 से भी अधिक दिनों तक होती थी।

## स्रोत : पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/climate-shifts-in-kaas-plateau